मार्च २०२४
अंक २५

ज्ञानोदय प्रभा

होली विशेषांक (रजत जयंती अंक)

सम्पादकीय

बुरा न मानो होली है

'बुरा न मानो होली है' बचपन में जब अपने दोस्तों के साथ होली खेलने जाते थे तो ये उक्ति बोलकर रंग लगाने में कितना मजा आता था और कोई बुरा भी नहीं मानता था | क्या अपना और क्या पराया | जो भी सामने आ गया, वह रंगे बिना नहीं निकलता था | अपनी-अपनी छत पर चढ़कर राहगीरों पर पिचकारी से रंग डालकर छिप जाने में बड़ा आनंद आता था | शाम को घर-घर जाकर गुलाल लगाना, गले मिलना, बड़ों को गुलाल का तिलक लगाकर पैर छूकर आशीर्वाद लेना, गुजिया खाना | सचमुच बड़ा मजा आता था | अब समय के साथ-साथ त्योहारों की रंगत कुछ फीकी पड़ती जा रही है | शायद व्यस्तता एवं कुछ अन्य कारण इसकी बजह हो सकती है | फिर भी होली की बात ही कुछ और है | हिन्दू कलेंडर के अनुसार होली फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाई जाती है | होली मनाने के पीछे कुछ पौराणिक कथाएँ एवं मान्यताएं हैं | एक पौराणिक कथा है जो भक्त प्रहलाद से जुडी हुई है | हिरण्यकश्यप राक्षसों का राजा था। उसका पुत्र प्रहलाद, भगवान विष्णु का परम भक्त था। हिरण्यकश्यप भगवान विष्णु को अपना शत्रु मानता था। जब उसे पता चला कि प्रहलाद विष्णु भक्त है, तो उसने प्रहलाद को विष्णु की भक्ति से रोकने का प्रयास किया, लेकिन प्रहलाद के न मानने पर हिरण्यकश्यप प्रहलाद को अनेक यातनाएं देने लगा। हिरण्यकश्यप ने प्रहलाद को पहाड़ से नीचे गिराया, हाथी के पैरों से कुचलने की कोशिश की, लेकिन भगवान विष्णु की कृपा से हर बार प्रहलाद बच गया। हिरण्यकश्यप की होलिका नाम की एक बहन थी। उसे वरदान था कि वह अग्नि में नहीं जलेगी। हिरण्यकश्यप के कहने पर होलिका प्रहलाद को मारने के लिए अपनी गोद में बैठाकर आग में प्रवेश कर गई। परन्तु भगवान विष्णु की कृपा से तब भी भक्त प्रहलाद बच गया और होलिका जल गई। तभी से बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में होलिका दहन होने लगा और ये त्योहार मनाया जाने लगा। शिवजी-कामदेव और राजा रघु से जुड़ी मान्यताएं भी हैं जो होलिका दहन से जुड़ी हैं। होलिका दहन से जुड़ी ये कथाएं और मान्यताएं हमें बुराई पर अच्छाई की जीत का संदेश देती है। वहीं इनसे समानता और एकता की शिक्षा भी मिलती है।

देश के अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग तरीके से होली मनाई जाती है | जहाँ पश्चिम बंगाल होली को गायन और नृत्य के साथ डोल जात्रा के रूप में मनाता है, वहीं दक्षिण भारत के लोग प्रेम के देवता कामदेव की पूजा करते हैं | उत्तराखंड में, इसे शास्त्रीय राग गाकर कुमाऊंनी होली के रूप में मनाया जाता है, जबकि बिहार में लोग परंपरागत रूप से अपने घरों को साफ करते हैं और फिर त्योहार मनाते हैं| भारत में होली के त्योहार का सबसे अच्छा अनुभव करने के लिए, उत्तर प्रदेश से अच्छा स्थान नहीं हो सकता विशेष रूप से ब्रज, मथुरा, वृंदावन, बरसाना और नंदगांव जैसे स्थान भगवान कृष्ण से निकटता से जुड़े हुए हैं| उत्सव के दौरान ये सभी स्थान काफी आकर्षक बन जाते हैं | बरसाना शहर लठ मार होली के लिए प्रसिद्द है, जहाँ महिलाएं पुरुषों को लाठी से मारती हैं, जबकि पुरुष खुद को बचाने के लिए ढाल लेकर इधर-उधर भागते हैं| यह और भी मजेदार और दिलचस्प हो जाता है, जब लोग एक साथ परंपरागत गायन और नृत्य करते हैं | वास्तव में त्योहार हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं | इन्हीं से हमारी पहचान है | यदि त्योहार न हो तो जीवन रंगहीन और निष्प्राण हो जायेगा | यही वह अवसर है जब हम दुनियां में कहीं पर भी हों, अपने घर आते हैं | सबसे मिलते जुलते हैं, जिससे आपसी प्रेम और सद्भाव बढ़ता है | होली के त्योहार पर लोग गिले शिकवे भुलाकर, रंग लगा कर प्रेम और सद्भावना का परिचय देते हैं|

मार्च माह की गतिविधियाँ

सुर्ख़ियों में

स्पिक मैके द्वारा
शास्त्रीय संगीत का अद्भुत प्रदर्शन

ज्ञानोदय सर्वमंगल विद्यालय में दिनांक २१ मार्च २०२४ गुरूवार को विश्व प्रसिद्ध संस्था स्पिक मैके के उस्ताद पंडित श्री संजीव शंकर एवं पंडित श्री अश्वनी शंकर ने शहनाई वादन के द्वारा शास्त्रीय संगीत का अद्भुत प्रदर्शन किया | साथी कलाकार श्री जुहेब ने तबला पर मनमोहक संगति कर प्रस्तुति में चार चाँद लगा दिए| पंडित श्री संजीव शंकर एवं पंडित श्री अश्वनी शंकर को हिन्दुस्तानी संगीत वाद्ययंत्र श्रेणी में वर्ष २०१०-२०११ के लिए प्रतिष्ठित संगीत नाटक अकादमी के उस्ताद बिस्मिल्लाह खान युवा पुरस्कार और वर्ष २०१५ में आदित्य विक्रम बिड़ला पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया था | हाल ही में इन्होंने अयोध्या में श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शहनाई वादन किया था|

ध्यातव्य है कि डॉ. किरण सेठ द्वारा स्थापित स्पिक मैके युवाओं के बीच भारतीय शास्त्रीय संगीत और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए एक स्वैच्छिक युवा आंदोलन है जो भारतीय शास्त्रीय संगीत, शास्त्रीय नृत्य, लोक संगीत, योग, ध्यान, शिल्प और अन्य पहलुओं को बढ़ावा देकर भारतीय सांस्कृतिक विरासत के अमूर्त पहलुओं को बढ़ावा देता है। भारतीय संस्कृति का यह दुनिया भर के ३०० से अधिक शहरों में फैला हुआ एक आंदोलन है।

कार्यक्रम का आरंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ | विद्यालय के प्राचार्य डॉ अभिनव शुक्ला ने पुष्पगुच्छ देकर सभी कलाकारों का स्वागत किया | शहनाई वादन का आरंभ राग मधुवंती के साथ हुआ | शंकर बंधुओं ने अपने संगीत कौशल से नायकन हॉल में उपस्थित श्रोताओं का मन मोह लिया | कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के चेयरमैन श्री मंत धर्मेन्द्र सेठ ने प्रतीक चिह्न देकर एवं शॉल ओढ़ाकर कलाकारों को सम्मानित किया|

कार्यक्रम का संचालन समन्वयक श्रीमती देबोलिना डे ने एवं आभार प्रदर्शन विद्यालय के उप प्राचार्य श्री विश्वनाथ पाण्डेय ने किया|

कार्यक्रम में नगर पालिका खुरई अध्यक्ष श्री मती नन्ही बाई, विद्यालय के चेयरमैन श्री मंत धर्मेन्द्र सेठ, श्री कैलाश चन्द्र मोदी, श्री सतीश कुमार सराफ, डॉ माहेश्वरी, श्री हेमचन्द्र बजाज एवं समस्त प्रबंध कार्यकारिणी के सदस्य उपस्थित रहे | कार्यक्रम का उद्देश्य ज्ञानोदय के विद्यार्थियों को देश की सांस्कृतिक विरासत से परिचित कराना था | विद्यालय के विद्यार्थियों के चतुर्मुखी विकास के लिए ज्ञानोदय विद्यालय निरंतर ऐसे प्रयास करता आ रहा है | उपस्थित सभी अतिथिगणों ने विद्यालय के इस प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा की एवं प्राचार्य डॉ अभिनव शुक्ला के प्रयासों को सराहा|

अन्य गतिविधियाँ

प्राकृतिक रंगों की यात्रा

१३ मार्च, २०२४ को, विज्ञान विभाग ने एक अद्भुत और आविष्कारशील गतिविधि "प्राकृतिक जादू" का आयोजन किया। इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों को प्राकृतिक रंगों के महत्त्व के बारे में जागरूक करना था, जो कि हानिकारक रासायनिक विकल्पों के विपरीत हैं। छात्रों ने प्राकृतिक माध्यम फूल और पत्तियों से रंगों को बनाया और प्राकृतिक स्रोतों के बीच संबंध का गहन अध्ययन किया, साथ ही पिगमेंट निष्कर्षण और लागू करने के वैज्ञानिक सिद्धांतों की गहरी समझ प्राप्त की।

गतिविधि का मुख्य उद्देश्य छात्रों को प्राकृतिक रंगों के महत्त्व के बारे में शिक्षित करना था। फलों, फूलों और पत्तियों जैसे विभिन्न पौधों के भागों से पिगमेंट निकालकर, प्रतिभागी उपयुक्त रंगों को तैयार करने में सहभागी थे, इससे सहकारिता और सहकारिता के बीच सहयोगी शिक्षा को बढ़ावा मिला।

इस गतिविधि में विभिन्न कक्षाओं के छात्रों ने भाग लिया । वे उत्साहपूर्वक पौधों के अलग-अलग भागों से प्राकृतिक रंग तैयार करते रहे, जिससे उनमें भागीदारी के कौशल और समूह भावना का विकास हुआ। इस तरह की गतिविधियाँ केवल रोचक ही नहीं बल्कि शैक्षिक भी साबित होती है, जो प्राकृतिक पिगमेंट्स को एक मूल्यपरक दृष्टिकोण प्रदान करती हैं।

छात्रों ने रचनात्मकता और संसाधनशीलता का प्रदर्शन किया, विभिन्न स्रोतों से पिगमेंट निकालते हुए, जैसे कि गुलाबी के लिए चुकंदर, हरे के लिए पालक पत्तियाँ, और पीले और भूरे रंग के लिए हल्दी। पेपर पर इन प्राकृतिक रंगों को लगाकर, छात्रों ने फलों से प्राप्त पिगमेंट्स की विविधता और सौंदर्य को देखा।

इसके अतिरिक्त, गतिविधि को अंतर्विषयक शिक्षा के तहत विज्ञान, कला, और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्रों से जोड़कर एक अवसर प्रदान किया।

यह गतिविधि केवल एक मनोरंजक और आनंदमय अनुभव ही नहीं रही है, बल्कि इस गतिविधि ने छात्रों को प्राकृतिक पिगमेंट की दुनिया से अवगत भी कराया है। गतिविधि के दौरान, छात्रों ने रचनात्मकता, संसाधनशीलता, और पारंपरिक तरीकों के परे खोजने की इच्छा का प्रदर्शन किया है। इस गतिविधि ने अन्य वैज्ञानिक शिक्षा, कला, और टिकाऊता के क्षेत्रों को जोड़ने का एक अवसर प्रदान किया है। छात्रों ने न केवल पिगमेंट्स के निष्कर्षण में शामिल वैज्ञानिक प्रक्रियाओं की खोज की है बल्कि प्राकृतिक रंगों के सांस्कृतिक महत्त्व और उनके संसाधनिक विकल्पों का अध्ययन किया है। वैज्ञानिक जाँच और कलात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देने के अतिरिक्त, इस गतिविधि ने गंभीरता से सोचने और समस्याओं का समाधान करने के कौशलों को भी प्रोत्साहित किया है।

इस गतिविधि में निम्नलिखित विद्यार्थी विजयी घोषित हुए -

कक्षा ६ अ से सिद्धि चौरसिया प्रथम, कक्षा ६ स से भावना शर्मा द्वितीय, कक्षा ६ स से पूर्वी लोधी तृतीय, कक्षा ६ स से शिवांश तृतीय, सातवीं द से अलीशा खान प्रथम, सातवीं ब से परिधि जैन प्रथम, सातवीं अ से दीक्षा पंथ द्वितीय, सातवीं ब से अनन्या तृतीय, सातवीं स से राधे यादव तृतीय, सातवीं स से अनन्या गोस्वामी चतुर्थ, आठवीं स से मान्या सिंह प्रथम, आठवीं द से देवांशी जैन द्वितीय, आठवीं स से राजुल विश्वकर्मा तृतीय, आठवीं द से दिशि जैन तृतीय, कक्षा ९ ब से टेशु जैन प्रथम, कक्षा ९ द से विधि यादव प्रथम, कक्षा ९ द से वेदिका ठाकुर द्वितीय, कक्षा ९ स से पूनम कुर्मी द्वितीय, कक्षा ९ अ से वैशाली कुर्मी तृतीय, कक्षा ९ ब से अंशिका जैन तृतीय, कक्षा १० ब से कृष कुर्मी प्रथम, कक्षा १० ब से राशि लोधी द्वितीय, कक्षा १० ई से जयश्री पंथ राशी लोधी द्वितीय, कक्षा १० ई से राशि दांगी तृतीय, कक्षा १० ब से पलक दांगी तृतीय, कक्षा १० ब से आयुषी जैन तृतीय, बारहवीं ब से हर्षिता कुर्मी प्रथम, बारहवीं ब से दीपांजलि कुशवाह प्रथम, बारहवीं ब से राशि जैन द्वितीय, बारहवीं ब से यशिता मेहर द्वितीय, बारहवीं अ से ऋषिका कुर्मी तृतीय, बारहवीं ब से महिमा साहू तृतीय।

अन्य विद्यार्थियों में

कक्षा १० ई से जिनवाणी रोशन, कक्षा १० ब से मिताली गोस्वामी, कक्षा १० अ से अविका शुक्ला, कक्षा १० ब से अनीशा लोधी, कक्षा ९ द से वैष्णवी कुर्मी, कक्षा ९ स से प्रेरणा विश्वास, कक्षा ९ स से तनुष्का रिछारिया का भी सराहनीय प्रयास रहा। यह गतिविधि विद्यालय के विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित की गयी थी।

अखिलभारतीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

अभी हाल ही में २६ फरवरी से १७ मार्च के मध्य आईआईटी दिल्ली की त्रिस्त २०२४ द्वारा एक अखिल भारतीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था जो दो भागों में आयोजित की गयी थी, जिसमें ज्ञानोदय सर्वमंगल विद्यालय के छात्रों ने भाग लिया |

इस प्रतियोगिता में कक्षा ६वीं-८वीं कक्षा और ९वीं-१२वीं कक्षा के विद्यार्थियों ने भाग लिया | यह प्रतियोगिता तीन चरणों में आयोजित की गयी थी | पहले चरण में ७२ विद्यार्थियों ने भाग लिया था जबकि दूसरे चरण में ४ विद्यार्थी थे |

प्रतियोगिता में भागीदारी छात्रों की बुद्धिमत्ता और प्रतिस्पर्धा की भावना को प्रदर्शित करती है।
ऐसी प्रतियोगिताएं मानसिक क्षमताओं को बढ़ाती हैं।
एवं महत्वपूर्ण जीवन कौशल जैसे विचार विमर्श, संचार, और सहयोग की भावना को विकसित करती हैं।
साथ ही बुद्धिजीवन की उत्कृष्टता और आजीविका शैली की संस्कृति को बढ़ावा देती हैं।
प्रतियोगिता में सक्रिय भागीदारी ने सुधार के क्षेत्रों को प्रकाशित किया यह बताते हुए कि रचनात्मकता प्रदर्शित करने का का सबसे अच्छा तरीका भागीदारी और अभ्यास है।
इस तरह की प्रतियोगिताओं में भाग लेना छात्रों को उनकी वर्तमान क्षमताओं को प्रदर्शित करने का अवसर देने के साथ-साथ उन्हें विकास के अवसर प्रदान करता है।

होली नृत्य प्रदर्शन

२० मार्च २०२४ बुधवार को ज्ञानोदय सर्वमंगल हायर सेकेंडरी विद्यालय में कक्षा ४ से ५ के लिए एक नृत्य गतिविधि का आयोजन किया गया जो होली विषय पर विशेष प्रस्तुति थी | यह कार्यक्रम नृत्य विभाग द्वारा आयोजित किया गया |

यह अद्भुत नृत्य प्रस्तुति नायकन हॉल में आयोजित की गई थी| प्रतिभागियों ने होली नृत्य को जीवंत दिखाने के लिए सफ़ेद रंग के परिधान पहने थे | मनमोहक संगीत के साथ ही नृत्य की शुरुआत होती है | प्रतिभागी एक दूसरे पर रंग गुलाल डालकर प्रसन्न मुद्रा में नृत्य करते हैं| प्रतिभागियों ने नृत्य द्वारा सद्भावना एवं प्रेम की प्रतीक होली को नयनाभिराम बना दिया| इस सम्पूर्ण प्रस्तुति में दर्शकों ने बहुत आनन्द लिया|

इस गतिविधि का उद्देश्य नृत्य के माध्यम से होली के महत्त्व को दर्शाना है | जो बुराई पर अच्छाई की जीत, वसंत के आगमन और लोगों के बीच एकता एवं सद्भाव को बढावा देने का प्रतीक है | इस गतिविधि के माध्यम से छात्र सांस्कृतिक परम्पराओं के बारे में जानते हैं | एकजुटता की भावना का आनंद लेते हैं और उत्सव की ख़ुशी का अनुभव करते हैं|

होली गतिविधि का परिणाम बहुआयामी है | इससे छात्रों के बीच समुदाय और समावेशिता की भावना को बढ़ावा मिलता है | इसके माध्यम से नृत्य और संगीत के माध्यम से रचनात्मकता और आत्म अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन मिला है | इसके अतिरिक्त यह छात्रों में समूह भावना और सहयोग जैसे सामाजिक कौशल विकसित करने में मदद करता है|

इस गतिविधि की प्रभारी सुश्री प्रियंका विश्वास थीं|

भौगोलिक अन्वेषण

दिनांक २० मार्च २०२४ बुधवार को ज्ञानोदय सर्वमंगल विद्यालय में एक अनूठी गतिविधि 'भौगोलिक अन्वेषण' का आयोजन किया गया|

इस गतिविधि द्वारा गूगल अर्थ का प्रयोग करके 8वीं कक्षा के छात्रों के मानचित्र कौशल को सुदृढ़ करना था। संवादात्मक अन्वेषण के माध्यम से, छात्रों को धरातल पर स्थानों को स्पष्ट करने के लिए अक्षांश और देशांतर कोआर्डिनेट्स का उपयोग करने की विधि से परिचित कराया गया । इसका मुख्य उद्देश्य गूगल अर्थ को भौगोलिक अन्वेषण के लिए एक उपकरण के रूप में प्रस्तुत करना है, छात्रों के मानचित्र और कोआर्डिनेट्स की समझ को गहरा करना है और एक आकर्षक शिक्षा वातावरण को बढ़ावा देना है। इस गतिविधि द्वारा चुनौतियों को पूरा करके और गूगल अर्थ पर विशिष्ट कोआर्डिनेट्स का पता लगाकर, छात्रों को अपनी मानचित्र पढ़ने की क्षमता को अभ्यस्त करने में मदद मिलती है।

छात्रों ने स्थानों और कोआर्डिनेट्स के अन्वेषण में सक्रिय भाग लिया, जिससे भूगोल, विज्ञान, और प्रौद्योगिकी की गहरी समझ को बढ़ाया गया, और इसे मजेदार तरीके से किया गया। विशिष्ट कोआर्डिनेट्स का पता लगाने के लिए गूगल अर्थ का उपयोग करके, छात्रों ने मानचित्रों को सही रूप से व्याख्या करने के लिए अपनी क्षमताओं को सुधारा। इस गतिविधि ने परस्पर संवादात्मक शिक्षा को बढ़ावा दिया और छात्रों को यह अनुभव प्रदान किया कि मानचित्र कैसे पृथ्वी की सतह का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिससे वे भौगोलिक विशेषताओं को सहज रूप से अन्वेषित कर सकते हैं।

इस गतिविधि के प्रभारी सुश्री अनुजा मोदी और श्री अनुराग सिंह ठाकुर थे|

अंतरसदनीय आशु भाषण प्रतियोगिता

ज्ञानोदय सर्वमंगल विद्यालय ने २३ मार्च २०२४ शनिवार को आठवीं और नौवीं कक्षा के छात्रों को शामिल करते हुए एक रोमांचक अंतरसदनीय आशु भाषण प्रतियोगिता की मेजबानी की। इस कार्यक्रम में निर्णायक की भूमिका श्री दीपेश जैन और श्री प्रिंस राय ने निभाई | इस प्रतियोगिता में उप-प्रधानाचार्य श्री विश्वनाथ पाण्डेय और समन्वयक श्री मती देबोलिना डे सहित विशिष्ट अतिथि उपस्थित थे|

इस गतिविधि में विद्यालय के शिक्षकों एवं छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया|

साहित्यिकी

व्यक्ति विशेष - आचार्य विद्यासागर जी

जैन आचार्य विद्यासागर महाराज जी जैन धर्म के महान संत और समाज सुधारक थे|

पूज्य संत आचार्य विद्यासागर जी महाराज को उनके उत्कृष्ट आध्यात्मिक ज्ञान के लिए सम्पूर्ण विश्व में जाना पहचाना जाता है। मात्र २२ साल की उम्र में उन्होंने आचार्य ज्ञानसागर द्वारा दिगंबर साधु के रूप में दीक्षा ली थी। आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज ने १८ फरवरी २०२४ में सल्लेखना विधि द्वारा समाधि ली। पूज्य श्री विद्यासागर जी ने छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले के डोंगरगढ़ स्थित 'चंद्रगिरि तीर्थ' में 'सल्लेखना' करके अपनी देह का त्याग किया।

आचार्य विद्यासागर का जन्म १० अक्टूबर १९४६ को कर्नाटक के सदलगा, बेलगाँव जिले में हुआ था। इनके बचपन का नाम विद्याधर था | इनके पिता का नाम मल्लप्पा जी अष्टगे एवं माता का नाम श्री मती था | महाराज के तीन भाई और दो बहनों ने भी उनसे ही ब्रह्मचर्यं लिया था। उनके माता-पिता ने भी दीक्षा लेकर समाधि प्राप्त की थी। आचार्य श्री विद्यासागर ने अब तक ५०० से अधिक मुनि, आर्यिका, ऐलक, क्षुल्लक आदि दीक्षाएं दी हैं।

ऐसा करने वाले वह देश के पहले आचार्य हैं, साथ ही उन पर ५६ पीएच.डी की जा चुकी हैं। मान्यताओं के अनुसार, आचार्य श्री विद्यासागर जैन धर्म के पहले ऐसे संत हैं, जिन्हें उनके गुरु द्वारा समाधि मरण से पहले ही आचार्य पद सौंप दिया गया था। उन्हें यह पद १९७२ में सौंपा गया था, तब उनकी आयु केवल २६ वर्ष की थी।

आचार्य विद्यासागर जी को हिंदी और संस्कृत सहित मराठी और कन्नड़ आदि आठ भाषाओं का भी ज्ञान था। इसके साथ ही उन्होंने हिंदी और संस्कृत में कई पुस्तकें भी लिखी, जिसमें से 'मूक माटी' महाकाव्य काफी लोकप्रिय हुआ। वहीं, उनकी 'सिंह' नाम की कविता को कई शैक्षणिक संस्थानों ने अपने पाठ्यक्रम में भी शामिल किया गया है। इसके साथ ही उन्होंनें अपने जीवनकाल में नर्मदा का नरम कंकर, डूबों मत लगाओ डुबकी, तोता क्यों रोता, शारदा स्तुति आदि कई पुस्तकें लिखी हैं।

आचार्य विद्यासागर जी ने अपने जीवनकाल के दौरान गौ सेवा, मातृभाषा हिंदी, बालिका शिक्षा, आयुर्वेद, हथकरघा जैसे कई विषय पर समाज का मार्गदर्शन किया। आचार्य जी ने अपने अनमोल प्रवचन में कई प्रमुख विषयों को उठाया जैसे - इंडिया नहीं भारत बोलो,शाकाहार अपनाओ गोवंश की हत्या को रोको, स्वदेशी को बढ़ावा दो, हिंदी को अनिवार्य करो,समाज के संपन्न लोग, दो गरीब बच्चों को गोद लेकर उन्हें पढ़ाएं ,पर्यावरण की सुरक्षा व्यक्ति का दायित्व है,दूसरों की भलाई के लिए सुखों का त्याग ही सच्ची सेवा है, दो सूत्रों का पालन करो - अहिंसा, जियो और जीने दो|

आचार्य विद्यासागर के शिष्य मुनि क्षमासागर ने उन पर 'आत्मान्वेषी' नामक जीवनी लिखी है | इस पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित हो चुका है|

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज भारत की ही नहीं अपितु विश्व की अनमोल धरोहर थे| उनके सामाजिक योगदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता| वे केवल व्यक्ति ही नहीं अपितु संस्था थे | वे अपने विचारों के माध्यम से हमारे मध्य हमेशा मौजूद रहेंगे | उनसे सम्पूर्ण विश्व शिक्षा लेता रहेगा|

(स्रोत- दैनिक जागरण)

विद्यार्थी कोना

होली आई

होली आई, होली आई
अपने साथ खुशियाँ लाई
रंगों का त्योहार है होली
होली आई होली आई
रंग हमारे पास हरे पीले लाल हैं
जो नीले आकाश को रंग से भर देते हैं
बच्चों का मनपसंद त्योहार है होली
रंगों का त्योहार है होली
होली वर्ष में एक बार आती है
चेहरे पर मुस्कान खिल जाती है
कहो होली आई, होली आई
ज़िन्दगी को रंगीन बना गई |

अंश जैन कक्षा ९ द

होली की कथा

बहुत पुरानी बात है हिरण्यकश्यप नाम का एक राक्षस था उसके पुत्र का नाम प्रहलाद था | प्रहलाद भगवान् का परम भक्त था | परन्तु उसका पिता भगवान् को अपना शत्रु मानता था | वह अपने राज्य में किसी को भी ईश्वर का नाम नहीं लेने देता था |
हिरण्यकश्यप ने घोर तपस्या से बहुत शक्ति अर्जित कर देवताओं को कष्ट देना आरंभ कर दिया और इन्द्रासन पर भी अपना अधिकार कर लिया | इस तरह उसने आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत करना आरम्भ कर दिया |
विष्णु से उसे विद्वेष था | संभवतः इसी की प्रतिक्रिया स्वरुप उसके पुत्र प्रहलाद में विष्णु के प्रति भक्ति की भावना जागृत हुई | एक बार हिरण्यकश्यप जब अपने पुत्र की शिक्षा के सम्बन्ध में जानने के लिए उसके गुरु के पास गया तब उसे अपने पुत्र की भक्ति भावना का ज्ञान हुआ | उसने अपने पुत्र को ईश्वर का नाम लेने से मना किया परन्तु प्रहलाद को ईश्वर भजन से नहीं रोक पाया | इस पर क्रोधित होकर उसने प्रहलाद को सर्पों की कोठरी में बंद कर दिया, पहाड़ों से गिराया, हाथी के सामने डलवाया, परन्तु वह उस भक्त का कुछ नहीं बिगाड़ पाया | अंत में उसने आदेश दिया कि मेरी बहन होलिका को बुलवाया जाय और उससे कहो कि वह प्रहलाद को अग्नि में लेकर बैठ जाय जिससे प्रहलाद जलकर मर जाएगा | होलिका को ऐसा वरदान मिला हुआ था कि अग्नि उसको जला नहीं सकती थी | अतः भाई की आज्ञा से वह भक्त प्रहलाद को गोद में लेकर आग के ऊपर बैठ गई लेकिन प्रहलाद का बाल भी बांका न हुआ और होलिका जलकर भस्म हो गई | भगवान् की कृपा से अग्नि प्रहलाद के लिए बर्फ के समान शीतल हो गई | इसी समय से होलिका जलाई जाती है |
(लोक कथाओं से)

परी जैन कक्षा ९ द

होली का महत्त्व

होली हिन्दू धर्म का एक प्रमुख त्योहार है | जिसे फाल्गुन मास के पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है | इस त्योहार में लोग आपस में एक दूसरे के रंग लगाते हैं व पिचकारी में रंगीन पानी भरकर लोगों पर डालते हैं | इस दिन सब लोग मिठाई खाते हैं |
होली का महत्त्व हमारे जीवन में खुशियों और रिश्तों की मिठास को बनाए रखना है | होली हमें प्रेम से रहने, एकता स्थापित करने और और आनंद भरा जीवन जीने की शिक्षा देता है | यह हिन्दू संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है | हमें हमारी धार्मिक-सांस्कृतिक विरासत को मान्यता देनी चाहिए |

वेदिका गुरहा कक्षा ९ ब

हँसना मना है

१. **अकबर** - सेनापति यह बताओ कि हम अनारकली को क्यों नहीं ढूढ़ रहे हैं ?
सेनापति - महाराज, क्योंकि हम मुग़ल हैं, गूगल नहीं |
२. **माँ** - बेटा क्या कर रहे हो ?
बेटा - पढ़ रहा हूँ |
माँ - शाबास ! क्या पढ़ रहे हो ?
बेटा - शोले फिल्म की कहानी

संकलन - विधि यादव कक्षा ९ द

पहेलियाँ

१. लाने पर काला, जलाने पर सफ़ेद | बताओ क्या ?
उत्तर - कोयला
२. दो किसान लड़ते जाएँ, उनकी खेती बढ़ती जाए, बोलो क्या ?
उत्तर - स्वेटर की बुनाई

संकलन - विधि यादव कक्षा ९ द

महापुरुषों के विचार

१. उठो ,जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य न मिल जाए - स्वामी विवेकानंद
२. वह परिवर्तन पहले स्वयं में करो जो तुम दूसरों में चाहते हो | - महात्मा गाँधी
३. जीवन में कभी निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि कमज़ोर आपका वक्त होता है आप नहीं | - श्री कृष्ण
४. वृक्ष के समान बनो जो कड़ी गर्मी सहने के बाद भी सबको छाया देता है | - कालिदास

संकलन - वेदिका ठाकुर ९ द

शिक्षक कोना

प्रेम और त्याग का त्योहार होली: एक दृष्टिकोण

होली एक ऐसा त्योहार है जो रंग, नृत्य और उत्सव से भरपूर होता है। यह समयरेखा में एक सीमांकन का बिंदु होता है जब गर्मी आती है और सर्दियों की विदाई होती है। होली का त्योहार गहरा आध्यात्मिक महत्त्व रखता है। लोग कहते हैं कि यह रंगों का त्योहार है, लेकिन मेरे दृष्टिकोण से यह प्रेम और त्याग का त्योहार है। होली के पहले दिन हम होलिका दहन का उत्सव मनाते हैं और होली के बाद हम धुलेंदी मनाते हैं। होलिका दहन के पीछे एक सुंदर प्रेम कहानी है। होलिका सेज कश्यप की पुत्री और हिरण्य कश्यप की बहन थी। होलिका एक सुंदर लड़की थी जो एलोजी से प्यार करती थी । हिरण्य कश्यप ने होलिका से कहा कि प्रहलाद को अग्नि में ले जाएं अन्यथा वह एलोजी को मार देगा। हिरण्यकश्यप ने अपने बेटे को मारने का निर्णय किया, क्योंकि उसका बेटा भगवान विष्णु का भक्त था और हिरण्यकश्यप एक अहंकारी और गुस्सैल राजा था । अपने पुत्र को मारने के लिए उसने अपनी बहन, होलिका, की सहायता ली, जो अग्नि देवता की कृपा से एक कपड़ा प्राप्त कर चुकी थी, जो उसे आग से सुरक्षित रखेगा। होलिका ने प्रहलाद को धोखा देकर उम्मीद की कि वह लोहे के प्याले में बैठेगा, आशा करती है कि वह आग में नष्ट हो जाएगा। लेकिन हर किसी के आश्चर्य के साथ, हवा चलने लगी जिससे होलिका का आशीर्वादित कपड़ा उड़ गया, होलिका को जला दिया गया, जबकि प्रहलाद अप्रभावित रह गया। यह घटना अच्छाई पर जीत के बारे में बताती है और इसे छोटी होली के रूप में मनाया जाता है। इसलिए होलिका दहन से पहले लोग होलिका की उसके बलिदान के लिए पूजा करते हैं | बृज मंडल क्षेत्र में, विशेष रूप से मथुरा और आस-पास के क्षेत्रों में, लोग राधा और कृष्ण के बीच प्यार के त्योहार के रूप में इसे मनाते हैं। होली के दौरान रंगों का उपयोग ईश्वरीय गुणों को अपने जीवन में मिलाने का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि रंगीन उत्सव समाज में सामंजस्य और एकता का संकेत देता है। त्योहार के तीसरे दिन, जिसे धुलेंदी के रूप में जाना जाता है, लोग अपनी अज्ञात और संस्कार से अपनी अविवेकता को धो लेते हैं। कहावत "होली का मतलब अतीत है" इस विचार को संक्षेप में समाहित करती है कि यह त्योहार अवांछित चीजों को बलिदान करने और गुणों को प्रेम करने का अवसर है। सारांश में, होलिका दहन और होली के आगामी दिन अपने जीवन में नकारात्मकता को बलिदान करने और सकारात्मकता, प्रेम और गुणों को ग्रहण करने के महत्त्व पर जोर देते हैं।

-श्री निराकार पटनायक

विनम्र निवेदन

पत्रिका को प्रकशित करने से पहले यद्यपि हरसंभव प्रयास किया गया है कि कोई त्रुटि न रहे, फिर भी भूलवश कोई त्रुटि रह गई हो तो संपादकमंडल क्षमा प्रार्थी है | पत्रिका को और बेहतर बनाने के लिए पाठकों के अमूल्य सुझाव सादर आमंत्रित हैं |

-संपादक

ज्ञानेन पुंसां सकलार्थ सिद्धि :

संपादक संरक्षक - प्राचार्य, ज्ञानोदय एस.एम. व्ही.एम. सीनियर सेकेंडरी स्कूल

मुख्य संपादक - डॉ. कीर्तिवर्धन श्रीवास्तव

छात्र संपादक - अर्हम जैन

सहयोग - हिंदी विभाग

तकनीकी सहायता - श्री विशाल कटारे एवं तकनीकी विभाग

छायांकन - श्री प्रशांत सील एवं विद्यार्थी

www.facebook.com/gyanodayakhurai
gyanodayaprincipal@gmail.com
www.gyanodayakhurai.org
youtube.com/UC_7RhrC1nipjZTanSKoEVEA
gyanodayakhurai/9826829441
gyanodayacampuscare.in
Gyanodaya khurai
9826829441, 07581-292149,292154

अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु क्यू आर को स्केन करें|

ज्ञानोदय एस.एम.व्ही.एम. सीनियर सेकेंडरी स्कूल, खुरई, सागर (म.प्र.)